इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र
भारत विद्या प्रयोजना,

सिंधु सरस्वती प्रकोष्ठ,
राष्ट्रीय सांस्कृतिक मानचित्रण मिशन

एवं

इतिहास विभाग,
शहीद भगत सिंह सांध्य महाविद्यालय
(दिल्ली विश्वविद्यालय)

के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित

सिंधु सरस्वती सभ्यता: साक्ष्य, संवाद एवं निरंतरता

पर अंतराष्ट्रीय गोलमेज सम्मेलन

अवधारणा पत्र

दिनांक एवं स्थान

30 सितंबर 2026
पूर्वाह्न **11:00 बजे** से मध्याह्न 1:30 तक
उमंग सभागार, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र,
जनपथ भवन, जनपथ, नई दिल्ली - 110001

पृष्ठभूमि

सिंधु सरस्वती सभ्यता भारतीय उपमहाद्वीप के प्रारंभिक इतिहास के सबसे महत्वपूर्ण अध्यायों में से एक है। इसके विस्तृत नगर प्रणाली, परिष्कृत जल-प्रबंधन व्यवस्था, शिल्प परंपराएँ, व्यापारिक संबंध, मुहरें, अभिलेख, कलात्मक अभिव्यक्तियाँ और भौतिक संस्कृति, दक्षिण एशिया में जटिल समाजों एवं सभ्यताओं के उद्भव और विकास को समझने के लिए महत्वपूर्ण साक्ष्य प्रदान करती हैं।

इस सभ्यता का भौगोलिक विस्तार उन क्षेत्रों में फैला हुआ था जो आज भारत और पाकिस्तान में स्थित हैं। हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, तक्षशिला और चन्हूदड़ों जैसे महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थल वर्तमान पाकिस्तान में स्थित हैं, जबकि राखीगढ़ी, धोलावीरा,

कालीबंगा, लोथल और बनावली जैसे स्थल वर्तमान भारत में स्थित हैं। इसलिए, आधुनिक काल की राजनीतिक सीमाएँ इस सभ्यता के सांस्कृतिक और पुरातात्विक भूगोल से समान नहीं हैं।

विगत कुछ वर्षों में, पाकिस्तान के सार्वजनिक और आधिकारिक सांस्कृतिक विमर्श में सिंधु घाटी सभ्यता की प्राचीन विरासत पर आरम्भ से ध्यान केंद्रित किया गया है। उदाहरण के लिए, पेरिस में पाकिस्तान के दूतावास ने सिंधु घाटी सभ्यता पर एक पुरातात्विक संगोष्ठी का आयोजन किया और प्राचीन सिंधु क्षेत्र को वर्तमान पाकिस्तान की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत के हिस्से के रूप में वर्णित किया। इस कार्यक्रम में चन्हूदड़ों में पुरातात्विक अनुसंधान और इस सभ्यता के अध्ययन में फ्रांसीसी पुरातात्विक मिशनों के योगदान पर ध्यान केंद्रित किया गया। यह प्रश्न पाकिस्तान में समकालीन सार्वजनिक और राजनयिक विमर्श में भी सम्मिलित हो गया है। पाकिस्तान के सूचना एवं प्रसारण मंत्री अत्ताउल्लाह तरार ने सिंधु घाटी सभ्यता को पाकिस्तानी राष्ट्रीय पहचान के केंद्र के रूप में वर्णित करते हुए कहा है कि, स्वयं को पाकिस्तानी के रूप में पहचानते समय वे स्वयं को "सिंधु घाटी सभ्यता के लोग" और सिंधु तथा उसकी सहायक नदियों के तटों से संबंधित लोग मानते हैं।

यह विषय भारत में भी राजनयिक और सार्वजनिक चर्चा में आया है। 28 जुलाई 2026 को पत्रकार वार्ता में, विदेश मंत्रालय के आधिकारिक प्रवक्ता श्री रणधीर जायसवाल ने कहा:

> "जो देश दशकों से सीमा पार आतंकवाद, धार्मिक कट्टरवाद और हिंसा को बढ़ावा दे रहा है, वह किसी बहुलवादी सांस्कृतिक विरासत पर कोई दावा नहीं कर सकता।"

इस वक्तव्य ने सांस्कृतिक विरासत के प्रश्न को बहुलवाद, ऐतिहासिक निरंतरता और अल्पसंख्यक समुदायों के साथ व्यवहार के व्यापक संदर्भ में रखा। प्रस्तावित गोलमेज सम्मेलन समकालीन राजनीतिक दावों के अतिरिक्त विद्वतापूर्ण साक्ष्यों के माध्यम से इन प्रश्नों का परीक्षण करना चाहता है।

औचित्य

सिंधु सरस्वती सभ्यता से जुड़ी समकालीन चर्चा कई महत्वपूर्ण अकादमिक प्रश्न उठाती है:

- पुरातात्विक, पुरालेखीय, भाषाई, साहित्यिक और पर्यावरणीय साक्ष्यों के माध्यम से इस सभ्यता को कैसे समझा जाना चाहिए?
- वे कौन सी भौगोलिक और सांस्कृतिक व्यवस्था थी जिनके भीतर यह सभ्यता विकसित हुई?
- सिंधु सरस्वती क्षेत्र और मध्य एशिया, ईरान, मेसोपोटामिया और प्राचीन विश्व के अन्य हिस्सों के पड़ोसी क्षेत्रों के बीच किस प्रकार की अंतर-क्रियाएँ (interactions) उपलब्ध थीं?
- सिंधु सरस्वती सांस्कृतिक क्षेत्र और बाद की भारतीय सभ्यतागत परंपराओं के बीच क्या संबंध है?
- आधुनिक राजनीतिक सीमाओं के भीतर स्थित पुरातात्विक स्थलों को व्यापक सभ्यतागत निरंतरता के संबंध में कैसे समझा जाना चाहिए?
- स्मारकों के संरक्षण और जीवंत बौद्धिक, भाषाई, धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं की निरंतरता के बीच क्या संबंध है?
- सत्यापनीय साक्ष्यों, पारदर्शी कार्यप्रणाली और अंतःविषय (interdisciplinary) छात्रवृत्ति के माध्यम से ऐतिहासिक दावों का आकलन कैसे किया जा सकता है?

आईजीएनसीए (इं.गाँ.रा.क.कें.) के माननीय सदस्य सचिव प्रो. सच्चिदानंद जोशी द्वारा लिखित लेख "Borrowed ancestors: Why Pakistan can't claim Panini for its rebranding project" जो 22 जुलाई 2026 को 'द टाइम्स ऑफ इंडिया' में प्रकाशित हुआ था, ने सांस्कृतिक विरासत और सभ्यतागत निरंतरता के प्रश्नों पर चल रही चर्चा में योगदान दिया है। यह लेख पुरातात्विक अवशेषों के भौगोलिक स्थान और उनसे जुड़ी बौद्धिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं की निरंतरता के बीच अंतर स्पष्ट करता है। इसमें तर्क दिया गया है कि सभ्यतागत विरासत के प्रश्नों का परीक्षण पीढ़ियों से भाषाओं, परंपराओं, ज्ञान प्रणालियों और सांस्कृतिक प्रथाओं के हस्तांतरण के माध्यम से किया जाना चाहिए।

लेख में कहा गया है, "भूगोल ने पाकिस्तान को स्थल दिए। लेकिन परंपरा नहीं दी," और आगे सचेत किया गया है कि स्मारकों का भौगोलिक स्वामित्व, अपने आप में, सभ्यता के अनन्य बौद्धिक स्वामित्व को स्थापित नहीं करता है: "भूगोल स्मारकों को संरक्षित कर सकता है; यह उन बौद्धिक परंपराओं को फिर से नहीं लिख सकता जिन्होंने उन्हें बनाया था।" पाणिनि के संदर्भ में, लेख में उल्लेख किया गया है कि "उनका जन्मस्थान आज भले ही पाकिस्तान की सीमाओं के भीतर हो; लेकिन जिस बौद्धिक जगत ने उन्हें जन्म दिया, वह वहाँ नहीं है," और अधिक व्यापक रूप से यह दर्शाता है कि "सभ्यताएँ सीमाओं के माध्यम से विरासत में नहीं मिलती हैं। वे निरंतरता के माध्यम से विरासत में मिलती हैं।"

ये विचार बदलती राजनीतिक और भौगोलिक सीमाओं के पार सभ्यताओं, ज्ञान परंपराओं और सांस्कृतिक प्रथाओं को कैसे स्थानांतरित किया जाता है, इस व्यापक प्रश्न का परीक्षण करने के लिए एक समकालीन प्रस्थान बिंदु प्रदान करते हैं। यह गोलमेज सम्मेलन सिंधु सरस्वती सभ्यता से संबंधित पुरातात्विक, पाठ्य संबंधी, भाषाई, पुरालेखीय और सांस्कृतिक साक्ष्यों के व्यापक अकादमिक परीक्षण के माध्यम से इन तर्कों को आगे बढ़ाएगा।

यह सम्मेलन इस सभ्यता को किसी वर्तमान राष्ट्र-राज्य की अनन्य विरासत के रूप में नहीं देखेगा। अपितु, यह भारतीय उपमहाद्वीप के व्यापक सभ्यतागत इतिहास के भीतर सिंधु सरस्वती सभ्यता का परीक्षण करेगा, साथ ही पड़ोसी क्षेत्रों के साथ इसके संपर्कों, सांस्कृतिक आदान-प्रदानों और संभावित निरंतरताओं पर भी विचार करेगा। इसका उद्देश्य सभ्यतागत निरंतरता, सांस्कृतिक विरासत और उपलब्ध साक्ष्यों की व्याख्या पर एक बहुविषयक और साक्ष्य-आधारित संवाद को प्रोत्साहित करना है।

उद्देश्य

गोलमेज सम्मेलन के मुख्य उद्देश्य हैं:

- सिंधु सरस्वती सभ्यता पर वर्तमान पुरातात्विक, पुरालेखीय, भाषाई, ऐतिहासिक और वैज्ञानिक अध्ययन की समीक्षा करना।
- सभ्यता के भौगोलिक विस्तार और सांस्कृतिक विविधता का परीक्षण करना।
- सिंधु सरस्वती क्षेत्र और अन्य प्राचीन सभ्यताओं के बीच के संवादों के साक्ष्यों पर चर्चा करना।
- सिंधु सरस्वती सभ्यता और बाद की भारतीय ज्ञान परंपराओं के बीच संबंध का आकलन करना।
- पुरातात्विक स्वामित्व, सांस्कृतिक विरासत और सभ्यतागत निरंतरता के बीच अंतर का परीक्षण करना।
- सभ्यता से संबंधित समकालीन दावों पर साक्ष्य-आधारित चर्चा को बढ़ावा देना।
- वरिष्ठ विद्वानों, पुरातत्वविदों, पुरालेखशास्त्रियों, इतिहासकारों और युवा शोधकर्ताओं को एक साथ लाना।
- अग्रिम शोध, दस्तावेज़ीकरण, डिजिटलीकरण और अकादमिक सहयोग के क्षेत्रों की पहचान करना।

चर्चा के प्रमुख विषय:

- **पुरातात्विक और भौतिक साक्ष्य**
    - प्रमुख स्थल और बसावट की पद्धति
    - नगर नियोजन, वास्तुकला और जल-प्रबंधन प्रणालियाँ
    - कृषि, शिल्प उत्पादन और तकनीकी पद्धतियाँ
    - अंतिम संस्कार, कलात्मक अवशेष और भौतिक संस्कृति
    - हाल की पुरातात्विक खोज और वैज्ञानिक जाँच
- **पुरालेख, लिपि और भाषा**
    - सिंधु सरस्वती मुहरें और अभिलेख
    - लिपि को पढ़ने/गूढ़वाचन (decipherment) के वर्तमान दृष्टिकोण
    - संकेतों और लेखन परंपराओं का तुलनात्मक अध्ययन
    - भाषाई और व्याकरणिक परिकल्पनाएँ
    - संगणकीय, सांख्यिकीय और अंतःविषय विधियों की भूमिका
- **सांस्कृतिक और सभ्यतागत संवाद**
    - व्यापार और विनिमय संपर्कतंत्र
    - मेसोपोटामिया, ईरान, मध्य एशिया और अन्य क्षेत्रों के साथ संबंध
    - वस्तुओं, प्रौद्योगिकि, प्रतीकों और विचारों का आवागमन
    - प्रारंभिक वैश्विक संवादों के पुरातात्विक साक्ष्य
    - एशिया के इतिहास में सिंधु सरस्वती सभ्यता का स्थान
- **सभ्यतागत निरंतरता**
    - सिंधु सरस्वती सांस्कृतिक क्षेत्र और बाद की भारतीय परंपराओं के बीच संबंध
    - बसावट, अनुष्ठान, प्रतीकवाद, शिल्प और ज्ञान पद्धतियों में निरंतरता
    - प्राचीन भारतीय सभ्यता के अध्ययन में संस्कृत, वैदिक और अन्य बौद्धिक परंपराओं का महत्व
    - जीवंत परंपराएँ और पीढ़ियों के माध्यम से ज्ञान का हस्तांतरण
    - सांस्कृतिक निरंतरता और पूर्वव्यापी राजनीतिक विनियोग में अंतर करना
- **विरासत, पहचान और ऐतिहासिक आख्यान**
    - आधुनिक राजनीतिक सीमाओं के पार साझा पुरातात्विक विरासत
    - प्राचीन स्थलों का संरक्षण और व्याख्या
    - सांस्कृतिक कूटनीति और समकालीन आख्यानों में प्राचीन विरासत का उपयोग
    - संग्रहालयों, अभिलेखागारों और डिजिटल संग्रहों की भूमिका
    - पारदर्शी, साक्ष्य-आधारित और तुलनात्मक विद्वता की आवश्यकता

वक्तागण

प्रो. सच्चिदानंद जोशी (मुख्य वक्ता)
सदस्य सचिव, इं.गाँ.रा.क.कें.

प्रो. सच्चिदानंद जोशी इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के माननीय सदस्य सचिव हैं। उनके सद्यःप्रकाशित लेख, "Borrowed ancestors: Why Pakistan can't claim Panini for its rebranding project" ने पुरातात्विक अवशेषों के भौगोलिक स्थान और उनसे जुड़ी बौद्धिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं की निरंतरता के बीच के अंतर की ओर ध्यान आकर्षित किया है।

प्रो. वसंत शिंदे

पूर्व कुलपति, डेक्कन कॉलेज, पुणे

प्रो. वसंत शिंदे भारत के प्रमुख पुरातत्त्वविदों में से एक हैं और हड़प्पा तथा सरस्वती-सिन्धु सभ्यता के अध्ययन से उनका दीर्घकालिक जुड़ाव रहा है। उनका शोध पुरातात्त्विक उत्खनन, प्राचीन बस्तियों, भौतिक संस्कृति तथा प्राचीन सभ्यताओं के वैज्ञानिक अध्ययन से संबंधित है।

प्रो. नागराज पाटुरी

पूर्व कुलपति, INDICA

प्रो. नागराज पाटुरी भारतीय ज्ञान परंपरा, भारतीय बौद्धिक परंपराओं एवं सभ्यतागत अध्ययन के विद्वान हैं। उनके अध्ययन के प्रमुख क्षेत्र भारतीय ज्ञान-व्यवस्थाएँ, सांस्कृतिक परंपराएँ, सभ्यतागत विमर्श तथा भारतीय बौद्धिक विरासत की निरंतरता से संबंधित हैं।

प्रो. आलोक त्रिपाठी

प्रोफेसर, असम विश्वविद्यालय; निदेशक, Centre for Archaeology and Museology

प्रो. आलोक त्रिपाठी पुरातत्त्वविद् हैं और उनका अकादमिक कार्य भारतीय पुरातत्त्व, प्राचीन बस्तियों, भौतिक संस्कृति एवं पुरातात्त्विक विरासत से संबंधित है। वे पुरातात्त्विक अनुसंधान, क्षेत्रीय अध्ययन तथा प्राचीन सांस्कृतिक अवशेषों के अध्ययन से जुड़े रहे हैं।

डॉ. संजय कुमार मंजुल

अतिरिक्त महानिदेशक, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)

डॉ. संजय कुमार मंजुल पुरातत्त्वविद् एवं भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के वरिष्ठ अधिकारी हैं। उनका व्यावसायिक एवं अकादमिक अनुभव पुरातात्त्विक अनुसंधान, अन्वेषण, उत्खनन, विरासत संरक्षण, प्रलेखन तथा भारत के पुरातात्त्विक अवशेषों के अध्ययन से संबंधित है।

डॉ. निकोलस सुरो देसाँ

फ्रांसीसी अभिलेखविद् एवं पुरालिपिविद्

डॉ. निकोलस सुरो देसाँ फ्रांस के शोधकर्ता हैं, जिनका अध्ययन प्राचीन लिपियों, अभिलेखविद्या एवं पुरालिपिविज्ञान से संबंधित है। वे विशेष रूप से सिन्धु-सरस्वती/सिन्धु लिपि के अध्ययन तथा विभिन्न प्राचीन लिपि-परंपराओं के तुलनात्मक अध्ययन से जुड़े हैं।

प्रो. करुणा शंकर शुक्ल

पुरातत्त्वविद्

प्रो. करुणा शंकर शुक्ल का शोध सिन्धु-सरस्वती/सिन्धु लिपि तथा हड़प्पाकालीन सांस्कृतिक अवशेषों के अध्ययन से संबंधित है। वे सिन्धु लिपि के संकेतों, अभिलेखों तथा उसके पाठ-वाचन एवं संभावित उन्मोचन से संबंधित विभिन्न दृष्टिकोणों पर कार्य करते रहे हैं।

डॉ. पुनीत गुप्ता

कर्करोग विशेषज्ञ एवं हड़प्पा-अभिलेखविद्

डॉ. पुनीत गुप्ता चिकित्सा क्षेत्र में विशेषज्ञता के साथ हड़प्पाकालीन अभिलेखों एवं सिन्धु-सरस्वती/सिन्धु लिपि के अध्ययन में भी सक्रिय हैं। उनका शोध लिपि-संकेतों के विश्लेषण, अभिलेखों में संकेतों के विन्यास तथा लिपि-पाठ के विभिन्न प्रस्तावित दृष्टिकोणों के अध्ययन से संबंधित है।

अपेक्षित अधिगम

गोलमेज सम्मेलन से निम्नलिखित अपेक्षाएं है:

- सिंधु सरस्वती सभ्यता पर एक बहुविषयक आदान-प्रदान को सुगम बनाना।
- पुरातात्विक, पुरालेखीय, भाषाई, ऐतिहासिक और सभ्यतागत दृष्टिकोणों को संवाद में लाना।
- प्रतिस्पर्धी व्याख्याओं और गूढ़वाचन प्रस्तावों के महत्वपूर्ण परीक्षण को प्रोत्साहित करना।
- साझा विरासत और पार-राष्ट्रीय (transnational) पुरातात्विक सहयोग के महत्व को रेखांकित करना।
- भविष्य के शोध, दस्तावेज़ीकरण और डिजिटल प्रसार के क्षेत्रों की पहचान करना।
- युवा विद्वानों को सभ्यता और इसके व्यापक सांस्कृतिक संबंधों पर आगे काम करने के लिए प्रोत्साहित करना।
- सिंधु सरस्वती सभ्यता पर एक संरचित अकादमिक शोध आधार के विकास में योगदान देना।

सम्मेलन यह स्थापित करने का प्रयास करेगा कि सिंधु सरस्वती सभ्यता का अध्ययन साक्ष्यों, अंतःविषय जाँच और दीर्घकालिक सभ्यतागत प्रक्रियाओं की मान्यता पर आधारित होना चाहिए। इसका मुख्य केन्द्रबिन्दु यह परीक्षण करना होगा कि समय और राजनीतिक सीमाओं के पार पुरातात्विक अवशेष, बौद्धिक परंपराएँ, सांस्कृतिक प्रथाएँ और ऐतिहासिक स्मृतियाँ आपस में कैसे संवाद करती हैं।